प्राक्कथन

योग, अष्टांगयोग, सांख्ययोग, कर्मयोग, सिद्धियोग, ब्रह्मयोग, समाधियोग, नामसंकीर्तनयोग, आत्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग, पाशुपतयोग, ब्रह्मचर्ययोग, क्रियायोग, हठयोग, ऋजुयोग, मन्त्रयोग, गीतायोग, राजयोग एवं प्रेमयोग और भी शायद कई शब्द या अभिव्यक्तियाँ योग शब्द के साथ जुड़ी हुई पायी जाती हैं ।

अनेक संतों, महात्माओं, योगियों और साधकों ने अपने-अपने अनुभव और लाभ को योग के साथ जोड़कर जनहित में समयानुसार एक नया नाम दिया और वह समय-समय पर प्रचलित भी हुआ । कुछ नाम दीर्घकाल तक स्मृति में रहे और कुछ अल्पकाल में ही विस्मृत हो गये । वर्तमान की भाँति पूर्व में प्रचार व संचार के इतने साधन उपलब्ध नहीं थे । एक साधक योगी स्वयं ही या कुछ शिष्यों के साथ प्रचार-प्रसार करते थे। लाखों वर्ष से भारतीय वैदिक शाश्वत् सनातन ज्ञान की परम्परा को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित करते रहना, उसमें अपने अनुभव और प्रयोगों से निखार लाना, ग्रन्थों -शास्त्रों और पुस्तकों के रूप में प्रकाशित करना, यह सरल कार्य नहीं था किन्तु साधकों का विद्या के प्रति अनन्य लगाव, विश्वास, भक्ति, लगन और समाज के प्रति स्नेह व दायित्व, जनकल्याण का संकल्प उन्हें समस्त बाधाओं से पार करके उनके लिये मार्ग सुलभ कराता गया ।

वर्तमान समय में भौतिक व्याधियाँ अधिक फैली हुई हैं । भौतिकता का युग है । जो कुछ भी व्यक्तिगत या सामाजिक जीवन में घटित हो रहा है, वह किसी न किसी रूप में भौतिकता के संदर्भ में हैं । आज योग की भी यही स्थिति है । केवल शारीरिक व्यायाम को योग के नाम से प्रसारित-प्रचारित किया जा रहा है । निश्चित रूप से व्यायाम के नित्य अभ्यास से शारीरिक लाभ प्राप्त होता है, कुछ मानसिक लाभ भी होता है किन्तु यदि आरम्भ से ही योग प्रशिक्षण में अष्टांग योग-योग विद्या के आठों अंगों का समावेश कर दिया जाता तो शायद आज विश्व चेतना अधिक सतोगुणी और सकारात्मक होती । मानव जीवन में दु:ख, समस्यायें, कठिनाईयाँ, परस्पर विवाद, आतंक जैसी नकारात्कमायें कम होती । कलिकाल का कुछ न कुछ प्रभाव तो अवश्य दृष्टिगोचर होगा, किन्तु अभी भी समय है । यदि हम सब अपने जीवन में योग को पूर्णता से सम्मिलित कर लें तो अब भी हम कलिकाल के प्रभाव को पर्याप्त मात्रा में निष्प्रभावी बनाकर कलियुग में भी सतयुग जैसा आनन्द ले सकते हैं ।

योग को पूर्णता में अपनाने का अर्थ है, केवल शारीरिक व्यायाम ही न हो, अष्टांग योग और वैदिक वाङ्मय में वर्णित योग के समस्त सिद्धांतों और प्रयोगों को हम अपनी दिनचर्या-जीवनचर्या में सम्मिलित करें और एक ऊर्ध्वगामी, विकासयुक्त, समस्त सम्भावनाओंयुक्त, दैहिक, दैविक और आध्यात्मिक उपलब्धियों से भरपूर ओजवान, तेजवान और सर्वसमर्थ चेतनावान, पूर्ण व्यक्तित्ववान जीवन का आनन्द लें ।

योग से सम्बन्धित अनेक ग्रन्थ हैं । शिव संहिता, घेरण्ड संहिता, पतञ्जलि योग सूत्र, ये प्रमुख ग्रंथ हैं । श्रीमदभगवद्गीता, अनेक उपनिषद् और अन्य भारतीय शास्त्रों में भी योग की प्रक्रिया, सिद्धांत, गुणों और

लाभों का वर्णन है । आज महर्षि पतञ्जलि का नाम योग विद्या के क्षेत्र में सर्वोपरि है ।

भारतीय षट-दर्शनों, (न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, कर्ममीमांसा एवं वेदान्त) में जीवन की पूर्णता को स्पष्ट कर दिया गया है । हमारी यह पुस्तक चूंकि योग विषय पर है अत: यहाँ षट-दर्शनों में से योग विषय का ही अधिक विस्तार करेंगे । योग को कैसे समझें? योगाभ्यास का महत्व क्या है? योगाभ्यास किसे करना चाहिये ? योगाभ्यास किसे नहीं करना चाहिये ? योग की प्रमाणिकता क्या है ?

इस तरह के अनेकानेक प्रश्न हमारे मस्तिष्क में आते हैं । शास्त्रोक्त ग्रंथों के तथा योग साधकों के अपने अनुभव तथा अनुसंधानों के परिणामों को लेकर बड़ी संख्या में लेख, शोध-पत्र व पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। सभी साधकों व लेखकों ने योग को अपनी-अपनी तरह समझाया है। एक सामान्य और सरल भाषा में योग को इस प्रकार समझा जा सकता है:

१. संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'युज्' धातु से योग शब्द की रचना हुई है 'युज्' का अर्थ है जोड़ना। आज भी हम गणित में योग शब्द को जोड़ने के लिये प्रयोग में लाते हैं । अत: योग का एक अर्थ जोड़ना, एकीकरण करना है । किसका जोड़, किसका एकीकरण? यह अगले कुछ बिन्दुओं में स्पष्ट होगा ।

२. मन और बुद्धि, मन का व्यक्त रूप मष्तिष्क और मष्तिष्क की क्रियात्मकता-बुद्धि (समझने के लिये मस्तिष्क को Hardware और बुद्धि को Software कह सकते हैं) के बीच समन्वयात्मकता स्थापित कर सकने वाले सिद्धाँत और इनके प्रयोग ही योग के नाम से जाने जाते हैं । योग को आजकल कई व्यक्ति मस्तिष्क और शरीर के बीच समन्वय स्थापित करने वाला (mind-body coordination) भी कहते हैं ।

३. मन की शाँत अवस्था-सूक्ष्म अवस्था-अव्यक्त चेतना और उसकी भी सूक्ष्मत्तर अवस्था आत्मा और उसके व्यक्त रूप शरीर के बीच की समन्वयकारी क्रिया योग है ।

४. योग शांत प्रशान्त स्थिर शुद्ध अद्वैत आत्मा और उसके चेतन रूप चेतना के बीच भी समन्वय स्थापित करता है ।

५. योग व्यक्त और अव्यक्त के बीच की एक अहम कड़ी है ।

६. योग आत्मा और परम आत्मा-परमात्मा के बीच की समन्वयकारी क्रिया है । आत्मा को परमात्मा तक ले जाने वाला या आत्मा को परमात्मा से मिला देने वाला योग ही है । हम सब सुन चुके हैं व्यक्ति समष्टि रूप है (Individual is cosmic), यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे (as is the physiology, is the universe) और यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे (as is the universe, is the physiology)। यह सिद्धांतत: तो ज्ञात है किन्तु मनुष्य कभी इसका आनन्द नहीं उठा पाता, वह अपने आपको सामान्यत: बहुत छोटा, दीनहीन, सीमित, संकुचित अनुभव करता है । योगाभ्यास मनुष्य की इस सीमित विचारधारा को अनन्त विस्तारित करके असीमित कर देता है ।

७. योग मनुष्य की चेतना में व्याप्त दुर्बलता को समाप्त करके जीवन में नई शक्ति, नई ऊर्जा, नया प्रकाश

और नया विश्वास उत्पन्न करता है ।

८. जीव ही ब्रह्म है। 'अहम् ब्रह्मास्मि', 'अयमात्मा ब्रह्म', 'सर्वंखलुइदम् ब्रह्म' किन्तु जीव को तो इसका ज्ञान ही नहीं है कि वह ब्रह्म स्वरूप है या ब्रह्म ही है । योग विद्या ही वह साधन है जो जीव को ब्रह्म होने का ज्ञान प्रदान करके ब्रह्मत्व का अनुभव कराता है ।

९. आत्मानुभूति, आत्मसाक्षात्कार, आत्मतत्व को समझने और समझाने के लिये जिस माध्यम की आवश्यकता है वह योग ही है ।

१०. मन की—आत्मा की शुद्धि, उसके विकास, उसकी शक्ति में वृद्धि, मानसिक शक्ति में वृद्धि और चेतना—आत्मा के आत्म रूप—प्रकट रूप, भौतिक शरीर का विकास, उसकी शक्ति का विकास, उसकी शुद्धि, उसके ओज और तेज में अभिवृद्धि के लिये सर्वाधिक उपयोगी योग ही है ।

११. आत्मिक, दैविक और भौतिक तीनों के मध्य समान संतुलन बनाये रखना और तीनों के असंतुलन से किसी भी प्रकार के ताप-दु:ख या समस्या को आने से रोकने में योग विद्या ही सक्षम है ।

१२. आत्मा के सर्वाधिक क्रियाशील रूप मन की गतिविधियों को, चंचलता को अत्यन्त सरलता से नियन्त्रित करके उसे विचारों के स्त्रोत तक ले जाकर स्थिर कर देना और फिर वहां से सभी कार्यों का सम्पादन करना, यह योग विद्या की परम विशेषता है । इसे ही भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में 'योगस्थ: कुरू कर्माणि' कहा है ।

१३. मानवीय चेतना की सातों अवस्थाओं जागृत चेतना से लेकर, स्पप्न, सुशुप्ति, तुरीय (भावातीत), तुरीयातीत, भगवत और ब्राह्मीय चेतना तक अनुभव करा देने की सामर्थ्य केवल योग विद्या में है ।

१४. योग विद्या व्यक्तित्व के मानसिक व शारीरिक सर्वाङ्गीण पूर्ण विकास का एकमात्र साधन है ।

महर्षि पतञ्जलि ने अष्टांग योग को विस्तार से समझाया है । योग दर्शन में पतञ्जलि योग सूत्रों को चार पादों में व्यक्त किया गया है । समाधिपाद, साधनपाद, विभूतिपाद एवं कैवल्यपाद।

समाधि पाद: में महर्षि पतञ्जलि ने योग में प्रवृत्त होने के लिये आधार तैयार किया और फिर योग विद्या का प्रवेश कराया । समाधिपाद के प्रथम तीन सूत्र एक तरह से इस पाद की पूर्ण भूमिका बना देते हैं ।

१. **अथयोगानुशासनम्:** अर्थात् अब योग का अनुशासन होगा, योग विद्या का प्रारम्भ होगा, इसका जीवन में नियमानुसार प्रवेश होगा, अभ्यास होगा ।

२. **योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:** अर्थात् चित्त की, मन की वृत्तियों, इच्छाओं को रोकना है । सामान्यजन इस सूत्र से भयभीत हो जाते हैं । यह तो बड़ा कठिन कार्य है, कैसा होगा? अपने मन की इच्छाओं को कैसे रोकें, यदि ऐसा किया तो जीना ही दूभर हो जायेगा, ऐसी भ्रान्ति फैली है । मन की वृत्ति को रोकना तो सबसे सरल कार्य है क्योंकि योग द्वारा मन की वृत्ति को रोकते नहीं है, मन की वृत्तियों को व्यवस्थित करते हैं, उन्हें उचित दिशा में मोड़ते हैं । बहिर्गामी मनोवृत्ति को अन्तर्गामी बनाते हैं।

इसमें कोई शक्ति या बल का प्रयोग नहीं होता । मन का अन्तर्मुखी होना तो मन की स्वाभाविक वृत्ति है । योग विद्या के माध्यम से बहिर्गामी हो रही वृत्तियाँ को केवल एक संकेत देना होता है कि तुम्हारा मार्ग तो अन्तःगामी है, अपने मार्ग अपने स्वभाव से भटको मत, वहीं रहो और वहीं से अपना कार्य सम्पादन करो, तभी तुम पूर्णता को प्राप्त होगे ।

समुद्र की लहरों के शाँत हो जाने का अर्थ समुद्र से लहरों का निकाल दिया जाना नहीं है। जब तक समुद्र की ऊपरी सतह चन्चल रहती है वह लहर हो जाती है और जब शाँत रूप होती है तो समुद्र कहलाती है । इसी तरह मन की चंचल बहिर्मुखी क्रिया योग विद्या द्वारा शाँत प्रशाँत होकर, अन्तःमुखी होकर सार्वभौम विशाल सत्ता होती है ।

३. **तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्** अर्थात् योग के ज्ञान और योगभ्यास के द्वारा चित्त की वृत्तियों को निरोध करके, नियंत्रित करके, अन्तर्मुखी करके अभ्यासकर्ता-दृष्टा अपने स्व-रूप, अपनी आत्मा में, अपनी परम-आत्मा में, परम सत्ता में अवस्थित होता है, स्थितप्रज्ञ हो जाता है, योगस्थ-योग में स्थित हो जाता है, समाधि का अनुभव करता है, यती हो जाता है।

आगे महर्षि पतञ्जलि ने योग द्वारा वृत्तियों पर विजयी होकर समाधि की प्राप्ति, उसका पूर्ण ज्ञान, उसके सारे गुण, अभ्यास विधान, प्रकार और अनुभव समाधिपाद में वर्णित कर दिये हैं । समाधिपाद में कुल ५१ सूत्र हैं ।

साधनपादः महर्षि पतञ्जलि ने पहले पाद में तो योग विद्या प्राप्ति और योगाभ्यास के सक्षम-उत्तम-योग्य अधिकारियों के लिये योग विद्या और अभ्यास का क्रम समाधि के स्तर तक वर्णित कर दिया। साधनपाद में मध्यम श्रेणी के अधिकारियों जिनका मन, चित्त, मस्तिष्क या बुद्धि अभी शुद्ध और सात्विक नहीं है, जो सांसारिक प्रपंचों-कामनाओं, वासनाओं, इच्छाओं, राग-द्वेष आदि से पूरित हैं, आच्छादित हैं, कलुषित हैं, मलिन हैं, बोझिल हैं, उनके लिये क्रियायोग के द्वारा यम नियम आदि का पालन करते हुए वे मन को एकाग्र कर अपनी चेतना, आत्मा की शुद्धि कर सकें, ये विधान वर्णित कर दिया ।

तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः

अध्याय २, सूत्र-१

साधनपाद के प्रथम सूत्र में महर्षि पतञ्जलि ने तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान के द्वारा क्रियायोग का मार्ग बता दिया और दूसरे सूत्र **समाधि भावनार्थः क्लेशतनूकरणार्थश्च** में क्रियायोग से क्या प्राप्त होगा, यह बता दिया । समाधि की भावना अवधारणा और क्लेशों को प्रभाव न्यून कर पाना या समाप्त कर पाना, यह मार्ग प्रवृत्त किया है ।

साधन पद में सुखःदुःख, इनका निवारण, समापन, दृष्टा-दृष्य और दर्शन की क्रिया, प्रकृति-पुरुष, प्रज्ञा, योगानुष्ठान, अष्टांगयोग, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि और उनकी विस्तृत व्याख्या है। साधनपाद में कुल ५५ सूत्र हैं ।

विभूतिपादः प्रथमपाद समाधिपाद में योग के उत्तमाधिकारी का योग में प्रवृत्त होना, द्वितीय पाद साधनपाद में मध्यमाधिकारी द्वारा क्रियायोग के माध्यम से योग में प्रवृत्त होकर बहिरङ्ग पांच तत्वों का विस्तृत वर्णन हुआ और अब तीसरे विभूतिपाद में अन्तरङ्ग संयम अर्थात् धारणा, ध्यान और समाधि का निरुपण महर्षि पतञ्जलि ने किया है। धारणा द्वारा चित्त वृत्तियों को, मनोवृत्तियों को स्थिर कर, ध्यान के द्वारा ध्येय तक पहुंचकर वहां आलम्बित रहना और फिर ध्यान की अग्रिम अवस्था–समाधि में प्रवेश कर चेतना का वहां ठहर जाना अर्थात् 'संयम' की प्राप्ति और उसका प्रकाशित होना, चित्त का एकाग्र होना, समाधि की अवस्था के विभिन्न अनुभव–ज्ञान सिद्धियों की प्राप्ति और मुक्ति का वर्णन विभूतिपाद में किया गया है । विभूतिपाद में कुल ५५ सूत्र हैं।

कैवल्यपादः योग में वृत्ति, समाधि, उसके साधन, सिद्धियाँ और मुक्ति का ज्ञान देते हुए कैवल्यपाद के प्रारम्भ में पाँच सिद्धियाँ और पाँच सिद्ध चित्त और चितिशक्ति का स्व–रूप में अवस्थित हो जाना अर्थात् कैवल्य को प्राप्त हो जाना महर्षि पतञ्जलि ने कैवल्यपाद में बतलाया है । कैवल्यपाद में कुल ३४ सूत्र हैं ।

अष्टांग योग विद्या का वर्णन हम इस पुस्तक में कर रहे हैं। सरल शब्दों में योग के सभी अंगों को समझा सकें इसका प्रयत्न किया है। परमपूज्य महर्षि महेश योगी जी के श्रीचरणों में निरन्तर २५ वर्षों तक रहकर योग विद्या के विषय में जो ज्ञान प्राप्त किया वह यहां संक्षिप्त में उल्लखित कर दिया है। इस पुस्तक के लेखन में, विशेष रूप से योगासन एवं प्राणायाम के विषय में योगाचार्य श्री चित्तरंजन सोनी जी ने सहायता की है, उनके हम आभारी हैं। महर्षि योग विभाग के योग शिक्षकों श्रीमती मीना सोनी, कुमारी दर्शिका व जागृति की सहायता के लिये हम उनका भी धन्यवाद करते हैं।

इस पुस्तक में हठ योग और उसकी क्रियाओं का वर्णन नहीं किया गया है क्योंकि यह क्रियायें योग्य गुरू अथवा प्रशिक्षक के मार्गदर्शन में ही अभ्यास करनी चाहिये, केवल पढ़कर नहीं।

आशा है यह पुस्तक आपको योग विद्या का पर्याप्त ज्ञान प्रदान करेगी और आप अपनी दिनचर्या में इन सिद्ध सिद्धाँतों का समावेश कर अपने जीवन का सार्वदेशिक विकास कर सकेंगे।

समस्त शुभकामनाओं सहित

ब्रह्मचारी गिरीश
श्री गुरुपूर्णिमा, ३१ जुलाई २०१५

पूज्य महर्षि महेश योगी जी

ब्रह्मलीन पूज्य महर्षि महेश योगी जी ने भारतीय शाश्वत् पारम्परिक वैदिक विज्ञान का अखण्ड दीप प्रज्जवलित कर इसकी प्रकाशमय ज्योति से सारे विश्व को पूर्ण ज्ञान का प्रसाद दिया।

महर्षि जी वैदिक भारत के स्वर्णिम इतिहास में एक ऐतिहासिक अद्वितीय उदाहरण छोड़ गये। जब हम अपने गुरु के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव और परब्रह्म की उपाधियुक्त स्तुति करते हैं तो किंचित त्रिदेवों का भाव तो जागृत होता है किन्तु उन भक्ति के क्षणों में देवों के गुणों अथवा उनके कार्यों की व्याख्या नहीं हो पाती। महर्षि जी ने कभी भी न स्वयं को गुरु कहा और न किसी से अपने को गुरु कहलवाया । सारा जीवन अपने परमाराध्य गुरुदेव अनन्त श्री विभूषित स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी के श्रीचरणों का स्मरण, उनका पूजन और सारे विश्व में जय गुरुदेव का उद्घोष कर उनकी जय जयकार करते रहे और करवाते रहे।

भारतीय शाश्वत् सनातन वैदिक ज्ञान-विज्ञान के आधार पर वेदभूमि- पूर्णभूमि-देवभूमि-पुण्यभूमि-सिद्धभूमि-प्रतिभारत भारतवर्ष का जगद्गुरुत्व और ख्याति जिस तरह महर्षि जी ने समस्त भूमण्डल में हजारों वर्षों के अन्तराल के पश्चात् पुनः स्थापित की और भारतीय वैदिक ज्ञान-विज्ञान, योग, भावातीत ध्यान का लोहा मनवाया, ऐसा उदाहरण या दृष्टांत समूचे वैदिक वांगमय में या आधुनिक काल में कहीं भी वर्णित नहीं है।

१९५३ में श्री गुरुदेव ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज, तत्कालीन शंकराचार्य, ज्योतिर्मठ, बद्रिकाश्रम हिमालय के ब्रह्मलीन हो जाने के बाद महर्षि जी ने ऋषियों, महर्षियों की तपस्थली उत्तरकाशी में साधना की और फिर सारे विश्व को ज्ञानी बनाने, धर्म अर्थ काम और मोक्ष का मार्ग दिखाने, दुःख, दारिद्र, अशांति आदि ज्वलंत समस्याओं का निदान लिये महर्षि जी अपनी स्वयं की साधना का आनन्द त्यागकर विश्वकल्याणार्थ निकल पड़े।

जब जब विश्व में धर्म स्थापना की आवश्यकता होती है, भगवान स्वयं पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। भगवान कृष्ण जी ने गीता में स्वयं कहा—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

इसी को श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने अपने शब्दों में कहा—

जब जब होइ धरम की हानि, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी ।
तब तब ले प्रभु विविध सरीरा, हरहिं कृपानिधि सज्जन पीड़ा॥

या तो भगवान स्वयं प्रकट होते हैं अथवा वे अपना अंश प्रदान कर किसी महान शुद्धात्मा को पृथ्वी पर अवतरित कर देते हैं।

पचास वर्षों में विश्व भर में अनगिनत भ्रमण करते हुए, ज्ञान, ध्यान, योग, यज्ञादि के अनेकानेक कार्यक्रमों की रचना करके करोड़ों व्यक्तियों की जीवन धारा को एक नया मोड़ देकर विश्व की सामूहिक चेतना को जिस प्रकार थामा और उसमें सतोगुण का संचार कर रजोगुणी और तमोगुणी प्रवृत्तियों पर विजय पाई, कलिकाल के प्रभाव में रहते हुए सतयुग के उदय का उद्घोष किया, यह सब किसी भी एक सामान्य ज्ञानी या प्रशासनिक पुरुष के द्वारा होना सम्भव ही नहीं था। यह केवल किसी देवी शक्ति का महर्षि जी के रूप में अवतरण था जिसके लिये हजारों वर्षों का कार्य केवल ५० वर्षों में कर पाना सम्भव हो सका।

महर्षि जी ने वेद, योग और ध्यान साधना के प्रति जन सामान्य में बिखरी भ्रान्तियों का समाधान कर उनको दूर किया। वैदिक वांगमय के ४० क्षेत्रों- ऋक्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त, कर्म मीमांसा, योग, गंधर्ववेद, धनुर्वेद, स्थापत्य वेद, काश्यप संहिता, भेल संहिता, हारीत संहिता, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, वाग्भट्ट संहिता, भावप्रकाश संहिता, शाङ्र्गधर संहिता, माधव निदान संहिता, उपनिषद्, आरण्यक, ब्राह्मण, स्मृति, पुराण, इतिहास, ऋक् वेद प्रातिशाख्य, शुक्ल यजुर्वेद प्रातिशाख्य, अथर्व वेद प्रातिशाख्य, सामवेद प्रातिशाख्य (पुष्प सूत्रम्), कृष्ण यजुर्वेद प्रातिशाख्य (तैत्तिरीय), अथर्व वेद प्रातिशाख्य (चतुरध्यायी) को एकत्र किया, उन्हें सुगठित कर व्यवस्थित स्वरूप दिया और वेद के अपौरुषेय होने की विस्तृत व्याख्या की।

महर्षि जी ने भावातीत ध्यान की सहज शैली प्रदान की, जो हर व्यक्ति अपने ही आवास में, परिवार में रहकर अभ्यास करके अपने लौकिक और पारलौकिक जीवन को धन्य कर सकता है। महर्षि जी ने प्रमाणित कर दिया कि साधना के लिये हिमालय जाकर किसी गुफा में धूनी रमाकर कठिन तपस्या आवश्यक नहीं है। २३० स्वतंत्र शोध संस्थानों और विश्वविद्यालयों ने ३५ देशों में ७०० से अधिक वैज्ञानिक अनुसंधान करके महर्षि जी के भावातीत ध्यान और सिद्धि कार्यक्रम से मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले लाभ की पुष्टि की।

महर्षि जी ने हजारों भावातीत ध्यान के केन्द्र स्थापित किये, लाखों व्यक्तियों को ध्यान और पतञ्जलि योग सूत्रों पर आधारित सिद्धि कार्यक्रम का प्रशिक्षण दिया। निष्काम कर्मयोग और ''योगस्थः कुरु कर्माणि'' का प्रयोग प्रथम बार किसी ने सम्पूर्ण विश्व को प्रायोगिक रूप में दिया। इसी क्रम में महर्षि जी ने भगवद् गीता की व्याख्या भी लिखी जो अपने आप में एक अनूठी कृति है। लगभग इसी समय में महर्षि जी ने ब्रह्म सूत्रों की भी व्याख्या की और ''साइन्स ऑफ बीइंग एण्ड आर्ट ऑफ लिविंग'' नामक पुस्तक लिखी, जिनका अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हो चुका है और अब तक लाखों प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

महर्षि जी ने ''चेतना विज्ञान'' की रचना की और उनका ये चेतना विज्ञान करोड़ों लोगों ने एक पाठ्यक्रम के रूप में लिया और अपने जीवन के आधार चेतना को विकसित कर ब्राह्मीय चेतना के स्तर तक पहुंचे ।

महर्षि जी का सत्संकल्प कि मनुष्य जन्म संघर्ष के लिये नहीं, दु:ख से व्यथित होने के लिये नहीं है, केवल आनन्द और मोक्ष के लिये हुआ है, इस सिद्धांत पर आधारित कार्यक्रम उन्हें लगातार आगे बढ़ाते ही गये। वेद निर्मित, ज्ञान शक्ति और आनन्द चेतना के सागर, वेदान्तिक महर्षि वास्तविक ऐतिहासिक अमर जगद्गुरु हो गये।

महर्षि जी ने विश्व भर में व्याप्त समस्याओं और संघर्ष की समाप्ति के लिये ''विश्व योजना'' बनाई जिसके प्रमुख उद्देश्यों में व्यक्ति का पूर्ण विकास करना, प्रशासन की उपलब्धियों को बढ़ाना, शिक्षा के सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित करना, समाज में प्रचलित विभिन्न प्रकार के अपराध और अप्रसन्नताकारक व्यवहार को समाप्त करना, पर्यावरण का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करना, व्यक्ति और समाज की अर्थ व्यवस्था को पूर्णता प्रदान करना और व्यक्ति के आध्यात्मिक लक्ष्यों की पूर्ति कराना था। इसके लिये महर्षि जी ने २००० नये चेतना विज्ञान के शिक्षक तैयार किये और २००० ''विश्व योजना केन्द्र'' स्थापित किये। ''ज्ञान युग'' की स्थापना के लिये महर्षि जी ने विश्व भ्रमण किया और ''महर्षि यूरोपियन रिसर्च यूनिवर्सिटी'' प्रथम विश्वविद्यालय की स्थापना स्विटजरलैण्ड में करके फिर अनेक वैदिक, आयुर्वेदिक और प्रबन्धन विश्वविद्यालयों की स्थापना की।

महर्षि जी ने आदर्श समाज की स्थापना के लिये विश्वव्यापी अभियान चलाया और १०८ देशों में ''योगिक उड़ान'' का अभ्यास करने वाले समूह भेजे। इन देशों के वैज्ञानिकों ने और सरकारों ने यह पाया कि बड़ी संख्या में सामूहिक ध्यान अत्यन्त प्रभावी होता है। किसी भी राष्ट्र की जनसंख्या का एक प्रतिशत यदि सामूहिक भावातीत ध्यान करे तो सामूहिक चेतना में सतोगुण की अभिवृद्धि होकर रजोगुणी और तमोगुणी नकारात्मक चेतना का शमन होता है। वैज्ञानिकों ने इसे 'महर्षि प्रभाव'' का नाम दिया। १९८३ में पहली बार ''टेस्ट ऑफ यूटोपिया'' असेम्बली के नाम से ७००० योगिक फ्लायर्स फेयरफील्ड आयोवा, अमेरिका में एकत्र हुए और कई सप्ताहों तक सामूहिक भावातीत ध्यान, सिद्धि कार्यक्रम और योगिक फ्लाइंग का अभ्यास किया। तब वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया कि यदि विश्व की जनसंख्या के एक प्रतिशत के वर्गमूल बराबर व्यक्ति एक साथ, एक स्थान और समय पर सामूहिक योगिक उड़ान भरें तो सतोगुण बहुत अधिक बढ़ेगा और सारी नकारात्मकतायें स्वयं ही समाप्त हो जायेंगी । इस अनुभव और प्रयोग के पश्चात् सारे विश्व में अनेक विश्व शांति सभायें– ''वर्ड पीस असैम्बलीस्'' आयोजित की गईं और उनके बहुत उत्तम परिणाम सामने आये।

महर्षि जी ने ''रोग विहीन समाज'' की स्थापना का न केवल नारा ही दिया बल्कि आयुर्वेद के शीर्षस्थ विद्वानों, शोधकर्ताओं, वैद्यों के साथ कई वर्षों तक शोध करके महर्षि आयुर्वेद के चिकित्सालयों और औषधि निर्माण शालाओं की स्थापना की । वैदिक स्वास्थ विधान के पाठ्यक्रमों की रचना करके हर

व्यक्ति को स्वास्थ शिक्षा देने को विधान किया। देश-विदेश के अनेक संस्थानों में वैदिक स्वास्थ्य विधान के प्रमाणपत्र व उपाधि पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। मंत्र चिकित्सा पर अनेक शोध कराये गये और अनेक कष्टसाध्य रोगों की त्वरित चिकित्सा आज सारे विश्व में उपलब्ध है।

महर्षि जी ने सम्पूर्ण वैदिक वांगमय से चुन-चुनकर जीवनपरक और त्वरित लाभ प्रदाता सिद्धांतों और प्रयोगों के आधार पर ''भूतल पर स्वर्ग निर्माण'' का कार्यक्रम बनाया और इसे जन सामान्य को उपलब्ध कराया । महर्षि जी ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि व्यक्ति चाहे तो वह अपना वातावरण स्वर्ग जैसा बना सकता है । इसके लिये उसे वैदिक शाश्वत् सिद्धांतों और प्रयोगों को अपने जीवन में अपनाना होगा। व्यक्ति प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सिद्धहस्त होकर स्वयं अपने और दूसरों के जीवन के लिये स्वर्ग का निर्माता हो सकता है। यह विस्तृत अनोखी दुर्लभ विचार शक्ति केवल महर्षि जी की ही हो सकती थी।

महर्षि जी ने वेद को विश्व ब्रह्माण्ड के संचालन का संविधान बतलाया। उन्होंने बताया कि वेद ही वे प्रकृति के विधान- सृष्टि के संविधान हैं जिनसे समूचे विश्व ब्रह्माण्ड का निर्बिघ्न, निरन्तर प्रशासन, अनादि काल से होता आ रहा है और अनन्त काल तक होता जायेगा । इसी सृष्टि के संविधान को आधार बनाकर उन्होंने ''प्रशासन के पूर्ण सिद्धांत'' नामक पुस्तक प्रकाशित की और ''राजनीति के सर्वोच्च सिद्धांतों'' का पाठ्यक्रम उपलब्ध कराया।

मनुष्य या किसी भी प्राणी या विश्व ब्रह्माण्ड के जीवन का आधार चेतना है। आज के वातावरण में शिक्षा जगत चेतना की शिक्षा से अनभिज्ञ है। बाल मंदिर से विद्यावारिधि या विद्यावाचस्पति तक के पाठ्यक्रमों में कहीं भी चेतना की शिक्षा का समावेश नहीं है। महर्षि जी ने समस्त विश्व में बड़ी संख्या में शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की और चेतना पर आधारित–आत्मा पर आधारित शिक्षा को वर्तमान शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित किया। महर्षि जी की चेतना पर आधारित शिक्षा की विशेषता यह है कि इस शिक्षा में केवल बुद्धिपरक होकर ज्ञान पूर्ति नहीं की जाती, इस व्यवस्था में चेतना का निरन्तर विस्तार किया जाता है। विद्यार्थी की जिज्ञासा बढ़ती जाती है और नया-नया सम्पूर्ण ज्ञान जो स्वयं उसकी चेतना में ही निहित है, वह प्रस्फुटित होकर व्यक्ति को महाज्ञानी बना देता है।

महर्षि जी ने शरीरिकी में नाड़ी तंत्र के शीर्ष वैज्ञानिक डॉ0 टोनी नेडर (एम.डी., पीएच.डी.) एवं कुछ अन्य आधुनिक चिकित्सा वैज्ञानिकों को प्रेरित, प्रोत्साहित और मार्गदर्शित किया कि वे मानव शरीर की संरचना का विस्तृत अध्ययन करें और यह देखें कि वैदिक वांगमय की संरचना और उसकी कार्य प्रणाली में तथा मानव शरीर की संरचना और कार्यप्रणाली में क्या समानतायें हैं। जब डॉ0 नेडर और उनके सहयोगी वैज्ञानिकों ने इसका अध्ययन प्रारम्भ किया तो वे चकित रह गये। उन्होंने पाया कि महर्षि जी केवल यूँ ही नहीं कह रहे थे। वास्तविकता यह पाई गई कि वेद और वैदिक वांगमय तथा मानव शरीर, दोनों की संरचना और कार्य प्रणाली एक ही है। अनुसंधानकर्ताओं ने कहा कि शरीर मानो एक भवन है और वैदिक वांगमय उसका मानचित्र है । उसी मानचित्र के आधार पर शरीर का निर्माण

हुआ है। महर्षि जी ने डॉ0 नेडर के इस महत्वपूर्ण शोध प्रबन्ध और चिकित्सा के क्षेत्र में मानव जाति को इस शोध से होने वाले लाभ को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें स्वर्ण से तथा कुछ वैज्ञानिककों को चाँदी से तौला और उन्हें अपने ''महर्षि विश्व शांति राष्ट्र'' का महाराजा नियुक्त कर उनका राज्यभिषेक करके उन्हें ''महाराजाधिराज राजाराम'' की उपाधि से सुशोभित किया। राजाराम की पुस्तक, ''एक्सप्रेशन ऑफ वेद एवं वैदिक लिटरेचर इन ह्यूमन फिजियोलॉजी'' प्रकाशित हुई जिसमें विस्तृत रूप से वेद और मानव शरीर की संरचना और कार्य प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन वर्णित है।

महर्षि जी ने वैदिक विश्व प्रशासन की स्थापना कर सम्पूर्ण विश्व को १२ समय क्षेत्रों (Time Zones) में विभाजित किया। इन समय क्षेत्रों को १२ राशियों से और भारतीय द्वादश ज्यातिर्लिंगों से जोड़कर वैदिक विश्व प्रशासन संचालन की व्यवस्था की। महर्षि जी ने प्रत्येक ज्योतिर्लिंग के साथ १६-१६ देशों को जोड़कर राष्ट्रकुल के सभी १९२ सदस्य राष्ट्रों के लिये यज्ञानुष्ठान और ग्रहशांति की व्यवस्था की है। भारतवर्ष के लिये प्रत्येक ज्योतिर्लिंग से ४८-४८ नगरों को जोड़कर ५७६ नगरों के लिये ग्रह शांति की व्यवस्था की गई है। महर्षि जी ने हालैण्ड में अगस्त 1997 में ब्रह्मचारी गिरीश को महर्षि वैदिक विश्व प्रशासन का प्रधानमंत्री नियुक्त किया ।

प्रकृति के संविधान वेद के द्वारा हर व्यक्ति को पूर्ण ज्ञान देने के उद्देश्य से महर्षि जी ने वैदिक शिक्षा, वैदिक स्वास्थ्य, वैदिक प्रशासन, वैदिक अर्थशास्त्र, वैदिक वास्तुकला, वैदिक सुरक्षा तथा वैदिक कृषि के क्षेत्रों में ज्ञान उपलब्ध कराने और प्रायोगिक कार्यक्रमों को लागू करने का विधान किया। पूर्ण ज्ञान हर व्यक्ति तक और विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने के लिये आठ विभिन्न सेटेलाइट चैनल्स् के द्वारा ''महर्षि ओपन यूनिवर्सिटी'' के माध्यम से पाठ्यक्रम उपलब्ध कराये। ''महर्षि वेदा विजन'' महर्षि चैनल पर भी महर्षि जी ने वैदिक कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों के प्रसारण का प्रबन्ध किया।

महर्षि जी ने प्राचीन स्थापत्यवेद-वास्तुकला की विद्या परमार्जित करके सारे विश्व को उपलब्ध करा दी। शोधकर्ताओं ने पाया कि विश्व में आधे से अधिक समस्यायें वास्तु के नियमों का उल्लंघन किये जाने और अनुचित ढंग से निर्मित भवनों, नगरों के कारण है। महर्षि जी ने स्थापत्यवेद-वास्तु विद्या के अनेक पाठ्यक्रम बनवाये और अपने सभी केन्द्रों और शैक्षणिक संस्थानों में इसे उपलब्ध करवाया। साथ ही सारे विश्व में वास्तु परामर्श देने की व्यवस्था भी की।

महर्षि जी ने ज्योतिष विद्या की खोती हुई प्रतिष्ठा पुन: प्रतिस्थापित की। सैकड़ों ज्योतिषी विभिन्न देशों में भ्रमण कर परामर्श देते रहे और उनके फलादेश के आधार पर व्यक्तियों और राष्ट्रों के लिये ग्रहशान्ति, यज्ञों और अनुष्ठानों की स्थायी व्यवस्था कर दी गई।

गन्धर्ववेद विद्या जो पाश्यात्य संगीत से प्रभावित और दूषित होने लगी थी और केवल भारतीय शास्त्रीय संगीत के नाम से रह गई थी, महर्षि जी ने शुद्धिकरण करके इसे अपने मूल रूप गंधर्ववेद में प्रतिष्ठित किया। ''महर्षि विश्व शांति संगीतोत्सवों'' के नाम से अब तक विश्व में ३००० से ऊपर संगीत सभायें आयोजित हो चुकी हैं जिसमें भारत और अन्य देशों में फैले सैकड़ों वरिष्ठ और उदीयमान गायक और

वादक भाग ले चुके हैं। सिद्धांत और प्रायोगिक प्रशिक्षण के अनेक ऑडियो और वीडियो पाठ्यक्रम भी बनाये गये जो महर्षि जी की सभी शैक्षणिक संस्थाओं में उपलब्ध हैं। महर्षि गन्धर्ववेद की गायन और विभिन्न वाद्यों की ऑडियो सीडीज् भी लाखों की संख्या में अब तक वितरित की जा चुकी हैं।

महर्षि जी ने ''पारम्परिक राजाओं के विश्व संघ'' की भी स्थापना करवाई जिसका उद्देश्य विभिन्न देशों की सांस्कृतिक विरासत को अच्छुण बनाये रखना और उसका संवर्धन करना है। सात महाद्वीपों के अनेक देशों के हजारों पारम्परिक और आदिवासी राजा इस संघ से जुड़कर अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र में अपनी प्रजा को महर्षि जी के वेद विज्ञान का ज्ञान उपलब्ध करा रहे हैं और बड़ी संख्या में भावातीत ध्यान और सिद्धि कार्यक्रम के साधक प्रशिक्षित हो रहे हैं जिनके अभ्यास से विश्व चेतना सतोगुणी होगी।

महर्षि जी ने वैदिक शाश्वत् ज्ञान के आधार पर सभी देशों को एक कर भौगोलिक सीमा रहित ''ग्लोबल कन्ट्री ऑफ वर्ल्ड पीस''-विश्व शान्ति राष्ट्र की स्थापना की। इसके संचालन के लिये महर्षि जी ने डॉ0 टोनी नेडर का महाराजाधिराज राजाराम के रूप में तथा ३२ राजाओं का वैदिक परम्परा से राज्याभिषेक कर राजतिलक किया। वेद विज्ञान के ४० क्षेत्रों और जीवन से सम्बन्धित ४० क्षेत्रों के ४० मंत्री अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर नियुक्त किये। विश्व शांति राष्ट्र की मुद्रा को ''राम मुद्रा'' का नाम दिया जो आज विश्व के अनेक देशों में प्रचलित हुई ।

विश्व शांति की स्थायी स्थापना के लिये महर्षि जी ने विश्व के ३००० बड़े शहरों में ''महर्षि पीस पैलेस''-महर्षि शान्ति भवन निर्माण का कार्यक्रम बनाया, जहां प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में और सभी राष्ट्रों में आपसी सामन्जस्य, सौहार्द्रता, शांति और अजेयता प्राप्त करने के सभी वैदिक सिद्धांत और कार्यक्रम उपलब्ध होंगे।

महर्षि जी ने ''पार्लियामेन्ट ऑफ वर्ड पीस'' का गठन किया जिसमें सभी देशों की सरकारों को जीवन के सभी क्षेत्रों में समस्या रहित प्रशासन के सिद्धांत दिये। प्रथम वर्ल्डपीस पार्लियामेंट भारतवर्ष के भौगोलिक केन्द्र-भारत के ब्रह्मस्थान में जनवरी २००६ में आयोजित हुई और तभी महर्षि जी ने भारत के ब्रह्मस्थान को ''विश्व शान्ति की राजधानी'' घोषित किया। ६६ देशों के प्रतिनिधियों ने प्रथम वर्ल्डपीस पार्लियामेंट में भाग लिया। जनवरी २००७ में महर्षि जी ने भारत के ब्रह्मस्थान को ''विश्व व्यापी रामराज्य की राजधानी'' भी घोषित किया।

महर्षि जी ने कार्यक्रम बनाया कि भारत के भौगोलिक केन्द्र- ब्रह्मस्थान में १६,००० वैदिक पंडितों का स्थायी आवास होगा। इसके अतिरिक्त भारत के उत्तर दक्षिण पूर्व और पश्चिम में ८,०००-८,००० वैदिक याज्ञिक पंडितों के आवासीय समूह होंगे। ये वैदिक पंडित सम्पूर्ण विश्व के लिये योग, यज्ञ, ग्रहशान्ति, आध्यात्मिक शान्ति, आधिदैविक शान्ति और आधिभौतिक शान्ति स्थापित कर अजेय सुरक्षा कवच तैयार करेंगे।

भारत के ४८ नगरों में ब्रह्मानन्द सरस्वती नगर बनाये जायेंगे। प्रत्येक नगर में १,५०० वैदिक पंडित होंगे। द्वितीय चरण में सभी ५२ शक्तिपीठों में, २१ विष्णु पीठों में, अष्टविनायकों (८ गणपति पीठों) में और 3 प्रमुख सूर्य मंदिरों में विधिवत् वैदिक आराधना और यज्ञादि की व्यवस्था की जायेगी।

महर्षि जी द्वारा स्थापित वेद विज्ञान विश्वविद्यापीठ के परिसरों में अब तक ६०,००० से भी अधिक वैदिक पंडित, कर्मकाण्डी, वैदिक विषयों के विद्वान और याज्ञिक तैयार किये जा चुके हैं और वर्तमान में १,००,००० से अधिक वैदिक विद्यार्थी प्रशिक्षणरत हैं।

भारत वर्ष में दो विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। मध्य प्रदेश में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय और छत्तीसगढ़ में महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमेंट एण्ड टेक्नालॉजी। वैदिक विश्वविद्यालय वैदिक वाङ्मय के चालीस क्षेत्रों के साथ-साथ आधुनिक विज्ञान के अनेक पाठ्यक्रम वेद विज्ञान के प्रकाश में उपलब्ध करा रहा है जिसमें वर्तमान में लगभग ५०,००० विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

महर्षि यूनिवर्सिटी छत्तीसगढ़ प्रमुख रूप से कम्प्यूटर विज्ञान और प्रबन्धन के पाठ्यक्रम उपलब्ध कराती है। यह सभी पाठ्यक्रम भी महर्षि वेद विज्ञान के प्रकाश में ही संचालित होते हैं। भारत वर्ष में १६ प्रान्तों में १४५ महर्षि विद्या मंदिर विद्यालय महर्षि जी ने स्थापित किये जहां सीबीएसई और विभिन्न प्रान्तीय शिक्षा मण्डलों के पाठ्यक्रमों के साथ चेतना विज्ञान की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। महर्षि जी द्वारा प्रतिपादित पूर्ण शिक्षा के सिद्धान्त-चेतना पर आधारित शिक्षा- आत्मा पर आधारित शिक्षा- समत्व योग पर आधारित शिक्षा-यूनिफाइड फील्ड पर आधारित शिक्षा १९७१ से सारे विश्व में महर्षि शिक्षण संस्थानों में लागू की गई और यही शिक्षा पद्धति महर्षि विद्या मंदिरों की शिक्षा का आधार और प्रमुख आकर्षण है। महर्षि विद्या मंदिरों में उत्तीर्ण लगभग ५०,००० सफल विद्यार्थी आज अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सफलतम आदर्श नागरिक हैं।

कारपोरेट जगत में प्रबन्धन के सफल और योग्य प्रबन्धक देने के लिये महर्षि जी ने महर्षि इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट की स्थापना की। इस समय भोपाल, इन्दौर, ग्रेटर नोएडा और बैंगलोर में चार शाखायें प्रबन्धन के विभिन्न पाठ्यक्रम उपलब्ध करा रही हैं। यहां के स्नातक प्रबन्धकों की मांग पूरे कारपोरेट जगत में है क्योंकि 'महर्षि वैदिक मैनेजमेंट' के सिद्धान्तों और प्रयोगों में महारत प्राप्त ये प्रबन्धक अपनी कम्पनी को भी उच्च लाभ पहुंचाते हैं।

महर्षि जी ने मध्य प्रदेश में ४ महर्षि महाविद्यालयों की स्थापना की जिनमें अब तक प्रमुख रूप से शिक्षा सम्बन्धी पाठ्यक्रम संचालित होते रहे हैं । अब इन महाविद्यालयों में अन्य पाठ्यक्रम भी उपलब्ध होंगे।

भारत में और सम्पूर्ण विश्व में इतनी बड़ी संख्या में विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और शिक्षण केन्द्र स्थापित करने के पीछे आखिर क्या उद्देश्य था?

शिक्षा देने वाले संस्थानों की कमी नहीं है, किन्तु किसी भी संस्थान में समस्त ज्ञान के स्त्रोत, जीवन के आधार, जीवन को संचालित करने वाले परम तत्व ''आत्मा'', चेतना की शिक्षा नहीं दी जाती। वास्तव में शिक्षा तभी पूर्ण होती है जब उसके तीनों तत्वों का ज्ञान विद्यार्थी को मिले- ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञान प्राप्ति की क्रिया। आज की शिक्षा में 'ज्ञाता' के विषय में कोई ज्ञान नहीं दिया जाता। जीवन के तीन तत्व अध्यात्म, अधिदेव और अधिभूत में से भौतिक जीवन की शिक्षा तो दी जाती है, महर्षि जी ने शिक्षा में अध्यात्म और अधिदेव का समावेश करके शिक्षा को पूर्ण बना दिया । केवल पुस्तकीय और मष्तिष्क में भरा ज्ञान क्या करेगा? ज्ञान का घर तो चेतना है, आत्मा है। 'ज्ञानम् चेतनायाम् निहितम्' । महर्षि जी ने बताया कि केवल ज्ञान के भंडार को भरदेने से विद्यार्थी का सम्पूर्ण व्यक्तित्व नहीं निखरेगा, ज्ञान के भण्डार का विस्तार भी करते रहना होगा और उसे भरते जाना भी होगा । केवल पूर्ण ज्ञानी मनुष्य ही सभी अर्थों में सक्षम मानव होगा। उसका जीवन सुखमय, समृद्धिमय, शांतिमय, विजयी, अजेय, दूसरों को सुख देने वाला, सकारात्मक और भूतल के स्वर्ग के आनन्द वाला जीवन होगा।

इस तरह की चेतनावान, सर्वसमर्थता और सर्वव्यापकता वाला मनुष्य ही सब कुछ कर पाने में सब कुछ पा लेने की योग्यता रखेगा। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में-शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सुरक्षा, पर्यावरण, पुनर्वास, व्यापार-व्यवसाय, प्रशासन आदि के क्षेत्रों में ऐसा व्यक्ति सफल होगा । यह हमारे प्रतिभारत भारतवर्ष के ज्ञान-विज्ञान की महती परम्परा है जो कालवश लुप्तप्राय हो रही थी, लेकिन महर्षि जी ने इसे पुनर्जाग्रत करके सम्पूर्ण विश्व में पुनर्स्थापित कर दिया है। भौतिक शरीर से महर्षि जी हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनका पुनर्गठित, पुनर्स्थापित यह सत्य, सनातन, शाश्वत् ज्ञान हजारों लाखों वर्षों तक पुनः जाग्रत रहकर मानव कल्याण करता रहेगा।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मॉ कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

महर्षि जी को यह दोनों अभिव्यक्तियाँ अतिप्रिय थीं । आइये हम सब मिलकर उनके देवीय आशीर्वाद की छत्रछाया में संकल्प लें कि समस्त चराचर विश्व के कल्याणार्थ महर्षि जी के समस्त संकल्प शीघ्र ही पूर्ण हों।

श्री गुरूपूर्णिमा के पावन पर्व पर हम अपनी वैदिक गुरू परम्परा, गुरुदेव स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी महाराज और महर्षि महेश योगी जी के श्रीचरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

जय गुरुदेव, जय महर्षि